# व्याकरणं रचना च

**(क) प्रत्याहाराणां परिचयः** - प्रत्याहार का अर्थ है संक्षेप । संस्कृत के वर्णों को संक्षेप में समझने के लिए वैयाकरण पाणिनि ने प्रत्याहारों का अपने सूत्रों में प्रयोग किया है। प्रत्याहारों का आधार उनके चौदह सूत्र हैं जो क्रमशः स्वरों और व्यञ्जनों को गिनाते हैं। यहाँ इन सूत्रों को स्मरण रखने से प्रत्याहारों का निर्माण किया जा सकता है, प्रयुक्त प्रत्याहारों में कौन-कौन वर्ण हैं, इन्हें समझा जा सकता है ।

**स्वरवर्ण के सूत्र** - अ इ उ ण् । ऋ ऌ क् । ए ओ ङ् । ऐ औ च् । (कुल चार सूत्र)

**व्यञ्जनवर्ण के सूत्र**– ह य व र ट्। ल ण्। ञ म ङ ण न म्। झ भ ञ्। घ ढ ध ष्। ज ब ग ड द श्। ख फ छ ठ थ च ट त व्। क प य्। श ष स र्। ह ल्। (कुल दस सूत्र)

वर्णमाला विषयक इन सूत्रों को प्रत्याहारसूत्र कहा जाता है। अण् प्रत्याहार कहने से अ इ उ –इन तीन वर्णों का बोध हो जाता है। अच् में सभी स्वरवर्ण तथा हल् में सभी व्यञ्जनवर्ण आ जाते हैं। इसीलिए अजन्त (अच् या स्वर से अन्त होने वाला) तथा हलन्त (व्यञ्जन से अन्त होने वाला) इन शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

प्रत्याहार दो वर्णों का होता है। उसमें दूसरा वर्ण हलन्त रहता है जो चौदह उपर्युक्त सूत्रों में से किसी के अन्तिम वर्ण के रूप में होता है–ण्, क्, ङ्, च्, ट् इत्यादि। प्रत्याहार का पहला अक्षर किसी दूसरे वर्ण के रूप में होता है। जितने वर्णों को हम निर्दिष्ट करना चाहें उतने वर्ण प्रत्याहार में आ जायेंगे। बीच वाले हलन्त को छोड़कर बीच के सभी वर्ण प्रत्याहार में समाविष्ट होते हैं। जैसे अक् कहें तो अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये पाँच वर्ण आ जायेंगे। जैसे जश् कहें तो ज, ब, ग, ड, द–ये सभी तृतीय वर्ण समाविष्ट होते

हैं। इस प्रकार वर्णसमूह को प्रत्याहारों द्वारा निर्दिष्ट किया जाता है। पाणिनि ने कुल 42 प्रत्याहारों का प्रयोग अपने व्याकरणग्रन्थ (अष्टाध्यायी) में किया है। यहाँ सुविधा की दृष्टि से कुछ प्रत्याहारों और उनके अन्तर्गत आए हुए वर्णों को देखा जा सकता है–

अण् – अ, इ, उ

अक् – अ, इ, उ, ऋ, ऌ

इक् – इ, उ, ऋ, ऌ

एङ् – ए, ओ

एच् – ए, ओ, ऐ, औ

ऐच् – ऐ, औ

खर् – ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स

जश् – ज, ब, ग, ड, द

यण् – य, र, ल, व

## अभ्यासः

1. **प्रत्याहार किसे कहते हैं ? सोदाहरण समझाएँ।**
2. **निम्नांकित प्रत्याहारों में समाविष्ट वर्णों को लिखें–**

   अच्, हश्, खर्, शल्, यण्, अक्

## (ख) सन्धिः

संस्कृत भाषा में दो वर्णों के मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते हैं। जैसे-गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः। यहाँ पूर्वशब्द (गिरि) के अन्तिम अक्षर "इ" का परवर्ती शब्द (इन्द्रः) के प्रथम अक्षर "इ" के साथ मेल होने पर 'ई' ऐसा विकार हुआ। अतः सन्धि है।

सन्धि के तीन भेद हैं-अच् सन्धि, हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि) तथा विसर्ग संन्धि। स्वर का स्वर से मेल होने पर जो विकार उत्पन्न होता है उसे अच् सन्धि या स्वर सन्धि कहते हैं। अच् सन्धि के मुख्य भेदों को हम यहाँ देखें।

**(i) यण् सन्धि** – इको यणचि। इक् प्रत्याहार के वर्णों का यण् प्रत्याहार का वर्ण में परिवर्तन हो जाता है यदि परवर्ती शब्द के आरम्भ में कोई अन्य स्वरवर्ण हो। तदनुसार इ का य्, उ का व्, ऋ का र्, और ऌ का ल् हो जाता है। इक् प्रत्याहार में भी चार वर्ण हैं और यण् प्रत्याहार में भी चार वर्ण हैं। इनका क्रमशः परिवर्तन होता है।

उदाहरण-

नदी + अस्ति = नद्यस्ति

यदि + अपि = यद्यपि

अपि + एकः = अप्येकः

इति + आदि = इत्यादि

अति + आवश्यकः = अत्यावश्यकः

इन सब में इ/ई का य् हो गया है।

अनु + अयः = अन्वयः

मधु + अरिः = मध्वरिः

वधू + आगमनम् = वध्वागमनम्

इन सब में उ/ऊ का व् हो गया है।

मातृ + आदेशः = मात्रादेशः

पितृ + अंशः = पित्रंशः

ऌ + आकृतिः = लाकृतिः

यहाँ ऋ का र् तथा ऌ का ल् हो गया है।

**(ii) दीर्घसन्धि** – अकः सवर्णे दीर्घः । अक् (ह्स्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ) यदि
समान वर्ण के साथ मिले तो दीर्घ एकादेश हो जाता है ।

जैसे- अद्य + अपि = अद्यापि

| | | |
|---|---|---|
| नर + अधमः | = | नराधमः |
| देव + आलयः | = | देवालयः |
| तथा + अस्तु | = | तथास्तु |
| महा + आत्मा: | = | महात्मा: |
| विद्या + आलयः | = | विद्यालयः |

यहाँ अ/आ के बाद अ/आ मिलने से 'आ' के रूप में दीर्घ एकादेश हो गया है

| | | |
|---|---|---|
| अपि + इदम् | = | अपीदम् |
| गिरि + ईशः | = | गिरीशः |
| अधि + ईश्वरः | = | अधीश्वरः |
| मही + इन्द्रः | = | महीन्द्रः |

यहाँ इ/ई के बाद इ/ई मिलने से "ई" के रूप में दीर्घ एकादेश हो गया है ।

| | | |
|---|---|---|
| लघु + ऊर्मिः | = | लघूर्मिः |
| भानु + उदयः | = | भानूदयः |

यहाँ उ/ऊ के बाद उ/ऊ होने से 'ऊ' के रूप में दीर्घ एकादेश है।

**(iii) गुण सन्धि** – आद् गुणः । अ/आ के बाद इ/ई होने से ए, उ/ऊ होने से ओ तथ
ऋ होने से अर् एकादेश हो जाता है ।

जैसे-

| | | |
|---|---|---|
| तव + इदम् | = | तवेदम् |
| तथा + इति | = | तथेति |
| परम + ईश्वरः | = | परमेश्वरः |

| | | |
|---|---|---|
| महा + ईशः | = | महेशः |
| तस्य + उपरि | = | तस्योपरि |
| सीता + उवाच | = | सीतोवाच |
| सदा + ऊर्ध्वम् | = | सदोर्ध्वम् |
| समुद्र + ऊर्मिः | = | समुद्रोर्मिः |
| परम + ऋषिः | = | परमर्षिः |
| महा + ऋषिः | = | महर्षिः |
| उत्तम + ऋणः | = | उत्तमर्णः |

**(iv) वृद्धि सन्धि** – वृद्धिरेचि । अ/आ के बाद ए/ऐ होने से "ऐ" एकादेश होता है, इसी प्रकार अ/आ के बाद ओ/औ होने से "औ" एकादेश होता है । इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं ।

जैसे –

| | | |
|---|---|---|
| एक + एकम् | = | एकैकम् |
| तथा + एव | = | तथैव |
| महा + ऐश्वर्यम् | = | महैश्वर्यम् |
| महा + ओषधिः | = | महौषधिः |
| जल + ओघः | = | जलौघः (बाढ़) |
| हृदय + औदार्यम् | = | हृदयौदार्यम् |

**(v) अयादि सन्धि**–एचोऽयवायावः । एच् प्रत्याहार (ए, ओ, ऐ, औ) का क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाना अयादि संधि है । किसी भी स्वर के पूर्व ऐसा वर्णविकार होता है जैसे–

| | | |
|---|---|---|
| ने + अनम् | = | नयनम् (ए का अय्) |
| शे + अनम् | = | शयनम् (ए का अय) |

| | | |
|---|---|---|
| भो + अनम् | = | भवनम् (ओ का अव्) |
| पो + अनः | = | पवनः (ओ का अव) |
| नै + अकः | = | नायकः (ऐ का आय्) |
| गै + अनम् | = | गायनम् (ऐ का आय्) |
| पौ + अनः | = | पावनः (औ का आव्) |
| भौ + अकः | = | भावकः (समीक्षा करने वाला, औ का आव्) |

**(vi) पूर्वरूप सन्धि** – एङः पदान्तादति । पदान्त एङ् प्रत्याहार (ए/ओ) क बाद परवर्ती शब्द अ से आरम्भ हो रहा है तो केवल पूर्व अक्षर के रूप में एकादेश होत है। अर्थात् ए + अ = ए। ओ + अ = ओ।

| | | |
|---|---|---|
| जैसे –रामे + अपि | = | रामेऽपि |
| गृहे + अस्मि | = | गृहेऽस्मि |
| बालको + अयम् | = | बालकोऽयम् |
| बालो + अहम् | = | बालोऽहम् |
| सो + अवदत् | = | सोऽवदत् |
| जातो + अहम् | = | जातोऽहम् |

उपर्युक्त उदाहरणों में विसर्ग सन्धि के नियमों से विसर्ग का ओकार हुआ है। इसलिए मूलतः बालकः+अयम्, बालः+अहम्, सः+अवदत्, जातः +अहम्–इसी रूप में सन्धिविच्छेद होगा।

## (ग) शब्दरूपाणि

### 'पितृ' शब्द (पुं.) ऋकारान्त

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | पिता | पितरौ | पितरः |
| द्वितीया | पितरम् | पितरौ | पितॄन् |
| तृतीया | पित्रा | पितृभ्याम् | पितृभिः |
| चतुर्थी | पित्रे | पितृभ्याम् | पितृभ्यः |
| पंचमी | पितुः | पितृभ्याम् | पितृभ्यः |
| षष्ठी | पितुः | पित्रोः | पितॄणाम् |
| सप्तमी | पितरि | पित्रोः | पितृषु |
| सम्बोधन | हे पितः ! | हे पितरौ ! | हे पितरः ! |

### 'गो' शब्द (पुं.-स्त्री.)

### ओकारान्त

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | गौः | गावौ | गावः |
| द्वितीया | गाम् | गावौ | गाः |
| तृतीया | गवा | गोभ्याम् | गोभिः |
| चतुर्थी | गवे | गोभ्याम् | गोभ्यः |
| पंचमी | गोः | गोभ्याम् | गोभ्यः |
| षष्ठी | गोः | गवोः | गवाम् |
| सप्तमी | गवि | गवोः | गोषु |
| सम्बोधन | हे गौः ! | हे गावौ ! | हे गावः ! |

'गो' का अर्थ गाय, बैल दोनों हैं, इसीलिए इसका प्रयोग पुंल्लिग-स्त्रीलिंग दोनों में होता है ।

## 'राजन्' (= राजा)

### नकारान्त

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | राजा | राजानौ | राजानः |
| द्वितीया | राजानम् | राजानौ | राज्ञः |
| तृतीया | राज्ञा | राजभ्याम् | राजभिः |
| चतुर्थी | राज्ञे | राजभ्याम् | राजभ्यः |
| पंचमी | राज्ञः | राजभ्याम् | राजभ्यः |
| षष्ठी | राज्ञः | राज्ञोः | राज्ञाम् |
| सप्तमी | राज्ञि, राजनि | राज्ञोः | राजसु |
| सम्बोधन | हे राजन्! | हे राजानौ! | हे राजानः! |

## 'नदी' शब्द

### ईकरान्त

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | नदी | नद्यौ | नद्यः |
| द्वितीया | नदीम् | नद्यौ | नदीः |
| तृतीया | नद्या | नदीभ्याम् | नदीभिः |
| चतुर्थी | नद्यै | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| पंचमी | नद्याः | नदीभ्याम् | नदीभ्यः |
| षष्ठी | नद्याः | नद्योः | नदीनाम् |
| सप्तमी | नद्याम् | नद्योः | नदीषु |
| सम्बोधन | हे नदि। | हे नद्यौ! | हे नद्यः! |

## 'तत्' (वह) शब्द

### पुँल्लिंग

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | सः | तौ | ते |
| द्वितीया | तम् | तौ | तान् |
| तृतीया | तेन | ताभ्याम् | तैः |
| चतुर्थी | तस्मै | ताभ्याम् | तेभ्यः |
| पंचमी | तस्मात् | ताभ्याम् | तेभ्यः |
| षष्ठी | तस्य | तयोः | तेषाम् |
| सप्तमी | तस्मिन् | तयोः | तेषु |

## 'तत्' (वह) शब्द

### स्त्रीलिंग

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | सा | ते | ताः |
| द्वितीया | ताम् | ते | ताः |
| तृतीया | तया | ताभ्याम् | ताभिः |
| चतुर्थी | तस्यै | ताभ्याम् | ताभ्यः |
| पंचमी | तस्याः | ताभ्याम् | ताभ्यः |
| षष्ठी | तस्याः | तयोः | तासाम् |
| सप्तमी | तस्याम् | तयोः | तासु |

## 'तत्' (वह) शब्द

### नपुंसकलिंग

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | तत् | ते | तानि |
| द्वितीया | तत् | ते | तानि |
| तृतीया | तेन | ताभ्याम् | तैः |
| चतुर्थी | तस्मै | ताभ्याम् | तेभ्यः |
| पंचमी | तस्मात् | ताभ्याम् | तेभ्यः |
| षष्ठी | तस्य | तयोः | तेषाम् |
| सप्तमी | तस्मिन् | तयोः | तेषु |

## (घ) 1. भू धातु (होना to be) परस्मैपद

### लट्लकारः (वर्तमानकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | भवति | भवतः | भवन्ति |
| मध्यम पुरुष | भवसि | भवथः | भवथ |
| उत्तम पुरुष | भवामि | भवावः | भवामः |

### लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | भविष्यति | भविष्यतः | भविष्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | भविष्यसि | भविष्यथः | भविष्यथ |
| उत्तम पुरुष | भविष्यामि | भविष्यावः | भविष्यामः |

## लङ्लकारः (अनद्यतनभूतकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | अभवत् | अभवताम् | अभवन् |
| मध्यम पुरुष | अभवः | अभवतम् | अभवत |
| उत्तम पुरुष | अभवम् | अभवाव | अभवाम |

## विधिलिङ् (चाहिए)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | भवेत् | भवेताम् | भवेयुः |
| मध्यम पुरुष | भवेः | भवेतम् | भवेत |
| उत्तम पुरुष | भवेयम् | भवेव | भवेम |

## लोट्लकारः (अनुज्ञा)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | भवतु | भवताम् | भवन्तु |
| मध्यम पुरुष | भव | भवतम् | भवत |
| उत्तम पुरुष | भवानि | भवाव | भवाम |

# 2. पा (पिब्) धातु (to drink) परस्मैपदी

## लट्लकारः (वर्तमानकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पिबति | पिबतः | पिबन्ति |
| मध्यम पुरुष | पिबसि | पिबथः | पिबथ |
| उत्तम पुरुष | पिबामि | पिबावः | पिबामः |

## ऌट्लकारः (भविष्यत् काल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पास्यति | पास्यतः | पास्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | पास्यसि | पास्यथः | पास्यथ |
| उत्तम पुरुष | पास्यामि | पास्यावः | पास्यामः |

## लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | अपिबत् | अपिबताम् | अपिबन् |
| मध्यम पुरुष | अपिबः | अपिबतम् | अपिबत् |
| उत्तम पुरुष | अपिबम् | अपिबाव | अपिबाम |

## विधिलिङ् (चाहिए)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पिबेत् | पिबेताम् | पिबेयुः |
| मध्यम पुरुष | पिबेः | पिबेतम् | पिबेत |
| उत्तम पुरुष | पिबेयम् | पिबेव | पिबेम |

## लोट्लकारः (अनुज्ञा)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पिबतु | पिबताम् | पिबन्तु |
| मध्यम पुरुष | पिब | पिबतम् | पिबत |
| उत्तम पुरुष | पिबानि | पिबाव | पिबाम |

## 3. दृश् धातु (देखना to see) परस्मैपदी

### लट्लकारः (वर्तमानकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पश्यति | पश्यतः | पश्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | पश्यसिं | पश्यथः | पश्यथ |
| उत्तम पुरुष | पश्यामि | पश्यावः | पश्यामः |

### ऌट्लकारः (भविष्यत् काल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | द्रक्ष्यति | द्रक्ष्यतः | द्रक्ष्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | द्रक्ष्यसि | द्रक्ष्यथः | द्रक्ष्यथ |
| उत्तम पुरुष | द्रक्ष्यामि | द्रक्ष्यावः | द्रक्ष्यामः |

### लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | अपश्यत् | अपश्यताम् | अपश्यन् |
| मध्यम पुरुष | अपश्यः | अपश्यतम् | अपश्यत |
| उत्तम पुरुष | अपश्यम् | अपश्याव | अपश्याम |

### विधिलिङ् (चाहिए)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पश्येत् | पश्येताम् | पश्येयुः |
| मध्यम पुरुष | पश्येः | पश्येतम् | पश्येत |
| उत्तम पुरुष | पश्येयम् | पश्येव | पश्येम |

### लोट्लकारः (अनुज्ञा)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | पश्यतु | पश्यताम् | पश्यन्तु |
| मध्यम पुरुष | पश्य | पश्यतम् | पश्यत |
| उत्तम पुरुष | पश्यानि | पश्याव | पश्याम |

## 4. अस् धातु (होना to be) परस्मैपदी

### लट्लकारः (वर्तमानकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | अस्ति | स्तः | सन्ति |
| मध्यम पुरुष | असि | स्थः | स्थ |
| उत्तम पुरुष | अस्मि | स्वः | स्मः |

### लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | भविष्यति | भविष्यतः | भविष्यन्ति |
| मध्यम पुरुष | भविष्यसि | भविष्यथः | भविष्यथ |
| उत्तम पुरुष | भविष्यामि | भविष्यावः | भविष्यामः |

### लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | आसीत् | आस्ताम् | आसन् |
| मध्यम पुरुष | आसीः | आस्तम् | आस्त |
| उत्तम पुरुष | आसम् | आस्व | आस्म |

## विधिलिङ् (चाहिए)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | स्यात् | स्याताम् | स्युः |
| मध्यम पुरुष | स्याः | स्यातम् | स्यात |
| उत्तम पुरुष | स्याम् | स्याव | स्याम |

## लोट्लकारः (अनुज्ञा)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | अस्तु | स्ताम् | सन्तु |
| मध्यम पुरुष | एधि | स्तम् | स्त |
| उत्तम पुरुष | असानि | असाव | असाम |

## 5. लभ् धातु (पाना to obtain) आत्मनेपदी

## लट्लकारः (वर्तमानकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | लभते | लभेते | लभन्ते |
| मध्यम पुरुष | लभसे | लभेथे | लभध्वे |
| उत्तम पुरुष | लभे | लभावहे | लभामहे |

## लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | लप्स्यते | लप्स्येते | लप्स्यन्ते |
| मध्यम पुरुष | लप्स्यसे | लप्स्येथे | लप्स्यध्वे |
| उत्तम पुरुष | लप्स्ये | लप्स्यावहे | लप्स्यामहे |

### लुङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | अलभत | अलभेताम् | अलभन्त |
| मध्यम पुरुष | अलभथाः | अलभेथाम् | अलभध्वम् |
| उत्तम पुरुष | अलभे | अलभावहि | अलभामहि |

### विधिलिङ् (चाहिए)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथम पुरुष | लभेत | लभेयाताम् | लभेरन् |
| मध्यम पुरुष | लभेथाः | लभेयाथाम् | लभेध्वम् |
| उत्तम पुरुष | लभेय | लभेवहि | लभेमहि |

### लोट्लकारः (अनुज्ञा)

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्रथमा पुरुष | लभताम् | लभेताम् | लभन्ताम् |
| मध्यम पुरुष | लभस्व | लभेथाम् | लभध्वम् |
| उत्तम पुरुष | लभै | लभावहै | लभामहै |

## (ङ) कारकाणि विभक्तयश्च

संस्कृत वाक्यविज्ञान में कारकों और विभक्तियों का बहुत महत्त्व है। जब हम एक संस्कृत पद को दूसरे पद के साथ, वाक्य बनाने के लिए, जोड़ते हैं तो स्वभावतः यह प्रश्न खड़ा होता है कि उन दोनों पदों में सम्बन्ध हो सकता है या नहीं। वाक्य में क्रिया की प्रधानता होती है।

उस क्रिया के सम्पन्न होने के लिए अनेक साधनों का उपयोग होता है । इन साधनों को कारक कहा जाता है । इसलिए संस्कृत व्याकरण में क्रिया से युक्त होने वाले पदार्थों को कारक कहते हैं–**क्रियान्वयि कारकम्, क्रियासम्पादकं कारकम्** । 'पठति' क्रिया है । इसका सम्पादन करने के लिए कोई कर्त्ता (पढ़ने वाला) चाहिए । पुनः कोई कर्म चाहिए जिसे पढ़ा जाए । वह ग्रन्थ, पत्रिका या लेख हो सकता है । कोई स्थान या अधिकरण चाहिए जहाँ पढ़ा जा रहा हो । वह पुस्तकालय में, घर में या किसी यान में बैठ कर पढ़ सकता है । इसी प्रकार क्रिया के विभिन्न आवश्यक उपकरणों को कारक या साधन कहते हैं । इनकी संख्या छह है–कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण । संस्कृत में सम्बन्ध और सम्बोधन को साक्षात् क्रियोपकारक न होने से कारक नहीं कहते हैं । यद्यपि अन्य कारकों के समान इनमें भी विभक्तियाँ लगती हैं ।

**कारकों के लक्षण–**

1. **कर्त्ता** – स्वतन्त्रः कर्त्ता । जो पदार्थ क्रिया के सम्पादन में स्वतन्त्र रूप से समर्थ है, इस रूप में जिसकी विवक्षा हो रही हो उसे कर्त्ता कहते हैं । जैसे बालकः धावति, वृक्षः पतति, अग्निः ज्वलति इत्यादि वाक्यों में क्रमशः बालक, वृक्ष और अग्नि स्वतंत्र रूप से क्रिया-सम्पादक है । सामान्यतः कर्त्ता चेतन होता है किन्तु अचेतन में भी कर्त्ता होने की स्थिति व्याकरण में स्वीकृत है । इसीलिए वायुः वहति, सूर्यः उदेति जैसे वाक्य होते हैं।

2. **कर्म**–कर्तुरीप्सिततमं कर्म । कर्त्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे सर्वाधिक प्राप्त करना चाहता है उसे कर्म कहते हैं । यह क्रिया के फल का आश्रय होता है । जैसे रामः ओदनं खादति । कर्म के कई भेद होते हैं । जैसे ईप्सित, अनीप्सित, अकथित, अन्यपूर्वक इत्यादि । कर्मणि द्वितीया–सूत्र से सब से द्वितीया विभक्ति होती है ।

3. **करण**–साधकतमं करणम् । क्रिया के निष्पादन में जो सर्वाधिक सहायक माना जाता है उसे

करण कहा जाता है । सामान्यतः इससे तृतीया विभक्ति होती है । जैसे–कलमेन लिखति । यहाँ कलम लेखन-क्रिया के निष्पादन में सर्वाधिक सहायक है ।

4. **सम्प्रदान**–कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् । कर्त्ता कर्म के द्वारा जिसे संयोजित करता है, वह सम्प्रदान है । सम्प्रदान उद्देश्य के रूप में होता है । जैसे–शिष्याय उपदेशं ददाति । उपदेश द्वारा शिष्य को कर्त्ता संयोजित करता है । शिष्य उसका उद्देश्य है ।

5. **अपादान**–ध्रुवमपायेऽपादानम् । जब विच्छेद के रूप में क्रिया हो तो जहाँ से विच्छेद आरम्भ होता है (Point of Separation) उसे अपादान कहते हैं । जैसे–वृक्षात् पतति । अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है ।

6. **अधिकरण**–क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं । यह आधार साक्षात् नहीं अपितु परम्परा से होता है । अर्थात् क्रिया के कर्त्ता और कर्म का आधार अधिकरण होता है । जैसे–वृक्षे वानरः तिष्ठति (यहाँ कर्त्ता वानर का आधार वृक्ष अधिकरण है) । स्थाल्याम् ओदनं पचति (यहाँ कर्म ओदन का आधार स्थाली अधिकरण है)। इस कारक में सप्तमी विभक्ति लगती है ।

**कुछ प्रमुख सूत्र पठनीय हैं–**

1. **कर्मणि द्वितीया** – कर्म कारक में सामान्य रूप से द्वितीया विभक्ति होती है यदि वह क्रिया से अनुक्त हो । इसलिए इस सूत्र का पूरा अर्थ है–अनभिहिते (अनुक्ते) कर्मणि द्वितीया । यदि कर्म उक्त हो जाए (जैसा कि कर्मवाच्य में होता है) तो इसमें प्रथमा विभक्ति ही होती है । अनुक्त कर्म के उदाहरण–माता **पुत्रं** पालयति, बालकः **चन्द्रं** पश्यति, त्वम् **ओदनं** खादसि । इन सभी उदाहरणों में कर्तृवाच्य का प्रयोग है । अतः कर्त्ता तो उक्त है किन्तु कर्म अनुक्त है । उक्त होने का अर्थ है–क्रिया को प्रभावित करना । अनुक्त कारक क्रिया के वचन और पुरुष को प्रभावित नहीं करता । उक्त कर्म का उदाहरण (उक्ते कर्मणि प्रथमा)–बालकेन **गावः** दृश्यन्ते, त्वया

**रोटिका** खाद्यते, अस्माभिः **ओदनः** रात्रौ न भुज्यते–इन सभी वाक्यों में कर्मवाच्य है । कर्म की प्रधानता है–उसका वचन क्रिया को प्रभावित करता है ।

2. **उपान्वध्याङ्वसः**–यह कर्म कारक का सूत्र है । इसके अनुसार उप, अनु, अधि, आङ्–इन उपसर्गों के बाद वस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है (अधिकरण नहीं) । कर्मसंज्ञा होने से "कर्मणि द्वितीया" के अनुसार द्वितीया विभक्ति लगती है । जैसे–बालकः **ग्रामम्** उपवसति (बालक **गाँव में** रहता है) । मम अग्रजः **राजमार्गम्** अनुवसति (मेरे बड़े भाई **सड़क पर** रहते हैं) । सेना **शिविरम्** अधिवसति (सेना **शिविर** में रहती है) । कृष्णः **मथुराम्** आवसति (कृष्ण **मथुरा** में रहते हैं ) ।

3. **साधकतमं करणम्**–यह करण कारक का सूत्र है । क्रिया के निष्पादन में कर्त्ता द्वारा जिसकी सर्वाधिक सहायता ली जाए वह कारक "करण" कहलाता है । अन्य सभी सहायकों के रहने पर भी जिसके आगमन के बाद ही क्रिया की सिद्धि हो, वही करण होता है । साधकतम का यही अर्थ है–प्रकृष्टोपकारकं कारकं करणम् । जैसे–कुठारेण वृक्षं कृन्तति (कुल्हाड़ी से पेड़ काटता है) । इसी प्रकार, यानेन गच्छति, कलमेन लिखति, पादाभ्यां चलति । करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है ।

4. **कर्तृकरणयोस्तृतीया**–अनुक्त कर्त्ता और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है । अनुक्त कर्त्ता केवल कर्मवाच्य और भाववाच्य में ही होता है, जहाँ क्रिया के वचन या पुरुष को प्रभावित करने की क्षमता उसमें नहीं रहती । जैसे–बालकेन स्थीयते (भाववाच्य), त्वया चन्द्रः दृश्यते (कर्मवाच्य), रामेण रावणः हतः (कर्मवाच्य), शिशुना सुप्यते (भाववाच्य) । इन सभी उदाहरणों में कर्त्ता अनुक्त है, अतः तृतीया विभक्ति लगी है । अनुक्त करण तो सभी वाच्यों में तृतीया ही ग्रहण करता है । जैसे–बाणेन हन्ति, हन्यते । कलमेन लिखति, लिख्यते । यानेन गच्छति, गम्यते

लोचनाभ्यां पश्यति, दृश्यते ।

5. **सहयुक्तेऽप्रधाने**–यह तृतीया विभक्ति का सूत्र है । सह (साथ) या इसके अर्थवाले सार्धम् साकम्, समम् का प्रयोग होने पर अथवा इनका अर्थ ज्ञात होने पर अप्रधान शब्द से तृतीया विभक्ति लगती ह । क्रिया से सीधा जुड़ा रहने वाला प्रधान शब्द होता है । उसके साथ अप्रधान शब्द भी रह सकता है । जैसे–सीतया सह रामः गच्छति । यहाँ गच्छति क्रिया में राम प्रधान है कर्त्ता है । सह के योग से अप्रधान सीता से तृतीया हुई है । इसी प्रकार, पयसा ओदनं खादति यहाँ सह का प्रयोग नहीं है किन्तु ओदन के साथ अप्रधान वस्तु के रूप में पयस् जुड़ा हुआ है इसलिए तृतीया हुई है ।

6. **येनाङ्गविकारः**–जिस एक अंग की विकृति से पूरे अंगधारी की विकृति लक्षित हो, उसे कोई विशेषण दिया जाए, तो अंग वाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है । जैसे–पादेन खञ्जः (पैर से लँगड़ा) । विकार एक अंग में है किन्तु खञ्ज अंगधारी को कहा जाता है । यदि पैर को ही खञ्ज कहें तो वह अभिहित होने से प्रथमा विभक्ति ग्रहण करेगा–पादः खञ्जः अस्य । अन्य उदाहरण–चक्षुषा काणः (किन्तु, काणं चक्षुः अस्य) । शिरसा खल्वाटः (किन्तु, खल्वाटं शिरः अस्य) ।

## (च) समासानां सामान्यपरिचयः

दो या उससे अधिक पदों को एक साथ रखना (सम्+असनम्) समास कहलाता है । यद्यपि वाक्य में भो ऐसा होता है किन्तु वहाँ सभी पद पृथक् रहते हैं । समास में वे पद एकात्मक हो जाते हैं । उनकी विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं । इसिलिए समास की परिभाषा है–**बहूनां पदानाम् एकपदीभावः समासः** । अनेक पदों का एकपद के रूप में बदल जाना समास है । सूर्यस्य उदयः – इस अभिव्यक्ति में दो पद हैं । समास हे. जाने पर "सूर्योदयः" एक ही पद बन गया । यही समास है ।

सभी शब्दों का सब शब्दों के साथ योग नहीं हो जाता। समास के कुछ नियम हैं। पदों के बीच अर्थगत सम्बन्ध को लेकर समास के मुख्य चार भेद होते हैं - अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि तथा द्वन्द्व। तत्पुरुष के भेद कर्मधारय और द्विगु हैं। यही मुख्य समास हैं। फिर भी नञ्, मध्यमपदलोपी, उपपद, प्रादि, अलुक् आदि समास-भेद गौण रूप से हैं। यहाँ मुख्य समासों का परिचय प्राप्त करें।

1. **अव्ययीभाव समास**—जब दो शब्द मिलकर अव्यय का रूप ले लें तो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं **(अनव्ययम् अव्ययं भवति यस्मिन्)**। सामान्यतः इसमें पूर्वपद का अर्थ प्रधान होता है अर्थात् वाक्य में क्रिया से साक्षात् सम्बद्ध रहता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

| **समस्त पद** | | **विग्रह** | | **अर्थ** |
|---|---|---|---|---|
| प्रतिदिनम् | – | दिनं दिनं प्रति | – | प्रत्येक दिन |
| प्रतिग्रामम् | – | ग्रामं ग्रामं प्रति | – | प्रत्येक गाँव में |
| यथाशक्ति | – | शक्तिम् अनतिक्रम्य | – | शक्ति के अनुसार |
| यथाक्रमम् | – | क्रमम् अनतिक्रम्य | – | क्रमानुसार |
| उपकृष्णम् | – | कृष्णस्य समीपम् | – | कृष्ण के पास |
| अनुरूपम् | – | रूपस्य योग्यम् | – | रूप के अनुकूल |

2. **तत्पुरुष समास**—जिस समास में उत्तर पद का अर्थ प्रधान हो उसे तत्पुरुष कहते हैं **(उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः)**। जैसे गृहपतिः –गृहस्य पतिः (घर का स्वामी)। इसके दो मुख्य भेद हैं—समानाधिकरण (जब विग्रह में दोनों पदों की विभक्तियाँ समान हों) तथा व्यधिकरण (विग्रह करने पर दोनों पदों की विभक्तियाँ भिन्न हों)। समानाधिकरण होने पर इसके कई नाम

भेदों के रूप में स्वतंत्र रूप से माने जाते हैं–कर्मधारय, द्विगु, नञ् आदि ।

व्यधिकरण तत्पुरुष समास का पूर्वपद द्वितीय से सप्तमी विभक्ति तक धारण करता है । अतः विभक्ति के आधार पर इसके भेद होते हैं । जैसे–

| | | | |
|---|---|---|---|
| गृहं गतः | = गृहगतः (घर गया हुआ) | – | द्वितीया तत्पुरुष |
| शरणम् आपन्नः | = शरणापन्नः (शरण में आया हुआ) | – | द्वितीया तत्पुरुष |
| धनेन हीनः | = धनहीनः | – | तृतीया तत्पुरुष |
| अग्निना दग्धः | = अग्निदग्धः | – | तृतीया तत्पुरुष |
| देशाय हितम् | = देशहितम् | – | चतुर्थी तत्पुरुष |
| परिवाराय सुखम् | = परिवारसुखम् | – | चतुर्थी तत्पुरुष |
| चौरात् भयम् | = चौरभयम् | – | पञ्चमी तत्पुरुष |
| ग्रामात् निर्गतः | = ग्रामनिर्गतः | – | पञ्चमी तत्पुरुष |
| निम्बस्य वृक्षः | = निम्बवृक्षः | – | षष्ठी तत्पुरुष |
| कूपस्य जलम् | = कूपजलम् | – | षष्ठी तत्पुरुष |
| अध्ययने मग्नः | = अध्ययनमग्नः | – | सप्तमी तत्पुरुष |
| धर्मे निपुणः | = धर्मनिपुणः | – | सप्तमी तत्पुरुष |

**कर्मधारय समास** – इसमें दोनों पद समान विभक्तियों के होते हैं । प्रायः वे विशेषण और विशेष्य के रूप में रहते हैं । जैसे–प्रियं च तत् वचनम् = प्रियवचनम् ।

महान् च असौ पण्डितः = महापण्डितः

रम्या च असौ नदी = रम्यनदी

पुण्या च असौ नगरी = पुण्यनगरी

कर्मधारय समास में कभी-कभी उपमान तथा उपमेय का भी योग होता है । जैसे–

चन्द्रः इव मुखम् = चन्द्रमुखम्

घन इव श्यामः = घनश्यामः

**द्विगु समास**–तत्पुरुष समास का पूर्वपद यदि संख्यावाचक हो तो इसे द्विगु कहते हैं । जैसे–

त्रयाणां फलानां समाहारः = त्रिफला

पञ्चानां पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम्

त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी

सप्तानां शतानां समाहारः = सप्तशती

(द्विगु समास कहीं नपुंसकलिंग और कहीं स्त्रीलिंग हो जाता है । इसकी व्यवस्था है ।)

**नञ् समास**–जब नञ् (न) का समास किसी सुबन्त पद के साथ होता है और निषेध अर्थ रहता है तो इसे नञ् समास कहते हैं । व्यञ्जन के पूर्व नञ् का "अ" एवं स्वर के पूर्व इसका "अन्" हो जाता है । जैसे –

न आदिः = अनादिः

न ईश्वरः = अनीश्वरः

न सुन्दरः = असुन्दरः

न प्रियः = अप्रियः

3. **बहुव्रीहि समास**–जिस समास में पूर्व या उत्तर पद का अर्थ प्रधान न होकर किसी अन्य (बाहरी) अर्थ की प्रधानता हो उसे बहुव्रीहि समास कहते है । (अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः) । वह बाहरी अर्थ विशेष्य का काम करता है और बहुव्रीहि समास का पद स्वयं विशेषण बन जाता है । जैसे–

पीताम्बरः = पीतानि अम्बराणि यस्य सः (जिस व्यक्ति के वस्त्र पीले हों । सामान्यतः विष्णु को पीताम्बर कहा जाता है यही रूढ़ अर्थ हो गया है । यहाँ न पीत प्रधान है न "अम्बर" (वस्त्र), अपितु दोनों से जुड़ा हुआ अन्य अर्थ प्रधान है । जब कोई कहे पीताम्बरं पूजयति तो क्रिया का सम्बन्ध न पीत से है न अम्बर से अपितु विष्णु ही पूजन के विषय हैं ।

बहुव्रीहि समास के विग्रह में यं सः, येन सः, यस्य सः इत्यादि लगे रहते हैं । अन्य उदाहरण--

| | | |
|---|---|---|
| महात्मा | = महान् आत्मा यस्य सः | = जिसकी आत्मा बड़ी हो । |
| जितेन्द्रियः | = जितानि इन्द्रियाणि येन सः | = जिसने इन्द्रियों पर विजय पर ली है । |
| चन्द्रमुखी | = चन्द्र इव मुखं यस्याः सा | = जिस स्त्री का मुख चन्द्रमा के समान हो । |
| यशोधनः | = यशः एव धनं यस्य सः | = यश ही जिसका धन हो वह व्यक्ति । |

4. **द्वन्द्व समास** – च (और) के अर्थ में जब सुबन्त पदों का समास होता है इसे द्वन्द्व समास कहते हैं **(चार्थे द्वन्द्वः)** । इसमें जुड़े हुए सभी पदों का अर्थ प्रधान होता है । जैसे –

| | | |
|---|---|---|
| रामश्च लक्ष्मणश्च | = | रामलक्ष्मणौ |
| माता च पिता च | = | मातापितरौ |
| गुरुश्च शिष्यश्च | = | गुरुशिष्यौ |
| पत्रं च पुष्पं च फलं च | = | पत्रपुष्पफलानि |

द्वन्द्व समास कभी-कभी समाहार (समूह) के अर्थ में होता है तब यह नपुंसक लिंग एकवचन में होता है । जैसे–

| | | |
|---|---|---|
| पाणी च पादौ च | = | पाणिपादम् (हाथ-पैर) |
| धनुः च शरश्च | = | धनुःशरम् |
| गंगा च शोणः च | = | गंगाशोणम् |

समाहार द्वन्द्व संस्कृत की वाग्धारा (मुहावरा) के अनुसार होता है इसीलिए इसके नये उदाहरण नहीं बनते । हिन्दी में भी हाथ -मुँह, हाथ-पैर आदि ऐसे ही समाहार द्वन्द्व हैं ।

## अभ्यासः

1. समास का अर्थ उदाहरण के साथ बताएँ ।
2. तत्पुरुष के भेदों का सोदाहरण परिचय दें ।
3. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए समास बताएँ– यथाशक्ति, प्रतिदिनम्, पाणिपादम्, मातापुत्रौ, चौरभयम् ।
4. सुमेलन करें –

| | |
|---|---|
| (क) त्रिफला | (i) घन इव श्यामः |
| (ख) राजपुरुषः | (ii) न आदिः |
| (ग) अनादिः | (iii) राज्ञः पुरुषः |
| (घ) घनश्यामः | (iv) त्रयाणां फलानां समाहारः |

5. निम्नलिखित विग्रह वाक्यों के समस्त पद लिखें –

(क) रामश्च लक्ष्मणश्च

(ख) माता च पिता च

(ग) यशः एव धनं यस्य सः

(घ) न सुन्दरः

(ङ) न ईश्वरः

# (छ) प्रत्ययाः

प्रत्यय उन शब्दांशों को कहते हैं जो निर्धारित धातुओं तथा प्रतिपादिकों से जोड़े जाते हैं। धातु से जुड़ने वाले प्रत्यय "कृत्" या "तिङ्" होते हैं । प्रतिपादिक से जुड़ने वाले प्रत्यय "सुप्" तद्धित या स्त्रीप्रत्यय होते हैं । प्रत्ययों के लगने से मूल शब्द (प्रकृति) का अर्थ बढ़ जाता है । वाक्य में प्रस्तुत होने की क्षमता तो सुप् या तिङ् प्रत्यय लगने से ही होती है । "रामः गच्छति"

**रामः सुबन्त** है और **गच्छति तिङन्त** है । इनमें क्रमशः 'सु' और 'ति' प्रत्यय लगे हैं ।

धातु से कृत् प्रत्यय भी लगते हैं । इनके कई भेद हैं । ये प्रत्यय विभिन्न अर्थों में होते हैं । यहाँ निर्धारित प्रत्ययों को हम देखें ।

1. **क्त्वा प्रत्यय** – यह पूर्वकालिक क्रिया में धातु से लगाया जाता है । एक ही कर्त्ता से सम्बन्ध जो क्रियाएँ होती हैं तो पूर्वकाल की क्रिया में क्त्वा प्रत्यय लगता है । इसमें "त्वा" बचता है । इसके "त्" का कहीं-कहीं सन्धि के कारण "ट" हो जाता है । जैसे–

बालकः विद्यालयं गत्वा (गम् + क्त्वा) नित्यं पठति । (गम् और पठ् –दोनों का कर्त्ता बालक है । पूर्वकालिक गम् से क्त्वा लगा है) ।

चन्द्रं **दृष्ट्वा** (दृश् + क्त्वा) शिशुः प्रसन्नः भवति ।

स गृहेऽपि **स्थित्वा** (स्था + क्त्वा) दुःखी वर्तते ।

ओदनं भुक्त्वा (भुज्+ क्त्वा) जलं पिबति ।

अन्य उदाहरण–

| | | |
|---|---|---|
| ज्ञा + क्त्वा | = | ज्ञात्वा (जानकर) |
| लभ् + क्त्वा | = | लब्ध्वा (पाकर) |
| दा + क्त्वा | = | दत्त्वा (देकर) |
| वच् + क्त्वा | = | उक्त्वा (कहकर) |
| कृ + क्त्वा | = | कृत्वा (करके) |
| स्ना + क्त्वा | = | स्नात्वा (नहाकर) |
| पा + क्त्वा | = | पीत्वा (पीकर) |

2. **ल्यप् प्रत्यय** –यह प्रत्यय क्त्वा के अर्थ में ही होता है । उपसर्ग के बाद धातु से क्त्वा नहीं होता है ल्यप् प्रत्यय लगता है । ल्यप् में "य" बचता है । जैसे–

| | | |
|---|---|---|
| आ + दा + ल्यप् | = | आदाय (लेकर) |
| वि + हस् + ल्यप् | = | विहस्य (हंसकर) |

अधि + इ + ल्यप् = अधीत्य (पढ़कर)

आ + नी + ल्यप् = आनीय (लाकर)

अनु + भू + ल्यप् = अनुभूय (अनुभव कर के)

उत् + स्था + ल्यप् = उत्थाय (उठकर)

नि + पा + ल्यप् = निपीय (पीकर)

उप + गम् + ल्यप् = उपगम्य (पास जाकर)

3. **तुमुन् प्रत्यय** –जब एक क्रिया दूसरी क्रिया के लिए होती है तब धातु से भविष्यत् काल के अर्थ में तुमुन् प्रत्यय लगता है । तुमुन् में तुम् बचता है जिसके त का कहीं-कहीं नियमतः "ट" या "ढ" हो जाता है । जैसे – बालकः **पठितुं** (पठ् + तुमुन्) गच्छति = लड़का पढ़ने के लिए जाता है ।

अहं कार्यं कर्तुम् (कृ + तुमुन्) इच्छामि = मैं काम करना चाहता हूँ । सकना, चाहना, आरम्भ करना इत्यादि क्रियाओं के प्रयोग में अप्रधान क्रिया के रूप में तुमुन् प्रत्यय का मुहावरेदार प्रयोग होता है जैसे–

पठितुम् इच्छति (पढ़ना चाहता है) । (पठ् + तुमुन्)

गन्तुं शक्नोति (जा सकता है) । (गम् + तुमुन)

प्राप्तुं वाञ्छति (पाना चाहता है) । प्र + आप् + तुमुन्

रेलयानं चलितुं प्रारभत (रेलगाड़ी चलने लगी) । चल् + तुमुन्

**अन्य उदाहरण :**

कथ + तुमुन् = कथयितुम् (कहने के लिए)

त्यज् + तुमुन् = त्यक्तुम् (छोड़ने के लिए)

नी + तुमुन् = नेतुम् (ले जाने के लिए)

पा + तुमुन् = पातुम् (पीने के लिए)

वच् + तुमुन् = वक्तुम् (बोलने के लिए)

श्रु + तुमुन् = श्रोतुम् (सुनने के लिए)

लिख् + तुमुन् = लेखितुम् (लिखने के लिए)

ज्ञा + तुमुन् = ज्ञातुम् (जानने के लिए)

## अभ्यासः

1. **निम्नलिखित पदों की व्युत्पत्ति लिखें :**

   पठितुम्, हसित्वा, लेखितुम्, आदाय, उपगम्य, पातुम्, वक्तुम्, गत्वा

2. **सही कथन के आगे (√ ) चिह्न तथा गलत कथन के आगे (x) चिह्न लगायें ।**

   (क) "ल्यप्" प्रत्यय तुमुन् अर्थ में लगता है ।

   (ख) धातु से जुड़ने वाले प्रत्ययों को तिङ् कहते हैं ।

   (ग) "सुप्" प्रत्यय प्रातिपदिक से जुड़ते हैं ।

   (घ) तुमुन् प्रत्यय में "तुम्" बचता है ।

   (ङ) "रामः" पद सुबन्त है ।

   (च) गच्छति पद सुबन्त है ।

   (छ) क्त्वा प्रत्यय पूर्वकालिक क्रिया में धातु से लगाया जाता है ।